



PANDIT CHHANNULAL MISHRA

Pt. Chhannu Lal Mishra is one of the greatest and most gifted Hindustani classical and semi-classical vocalists of India. He can be reckoned among the all time great vocalists to hail from the ancient city of Varanasi. He has the distinction of being a versatile vocalist, equally proficient in classical, semi-classical, light music and folk music such as Khyal, Thumari, Dadra, Kajri, Chaiti, Sawami, Holi, Bhajan, folk singing tradition of Purab Ang and many more.

2. Born on 3rd August, 1936, in village Hariharpur, Distt. Azamgarh, Pt. C.L. Mishra received his previous music training from his father Late Pt. Badri Prasad Mishra. Having being initiated into the nuances of singing by his father, he moved to Muzaffarpur (Bihar) for further training at the feet of Ustad Abdul Ghani Khan Sahab of the Kirana Gharana. This bond of the teacher and the taught, the master and the disciple was nurtured in the time honoured tradition of "Guru Shishya Parampara".

3. Playing on the "Swar Mandal", Pt. C.L. Mishra holds his audience spell-bound with his mellifluous rendition and the unique style of explaining the basics of music during his presentation. The renowned musicologist, Late Thakur Jaidev Singh had offered to groom his adolescent prodigy into the subtleties of Indian classical music. Pt. Mishra has been blessed with an extra ordinary musical fluidity. He wears his natural genius easily, displaying easy mastery over rhythm and melody. Any listener at his concert is dazzled at, the majestic ease with which he renders musical sequences without any obvious effort or deliberation. He has also released many Audio Albums and has sung for Bollywood too.

4. The Vocal style which Pt. C.L. Mishra has evolved is a blend of the ecstatic Kirana Badhat and the highly embellished features of the Patiyala Gharana. His classical pieces reveal a fascinating harmony of Punjab, Purab and Gaya Style. He has transcended the confines of Gharana system and has brought into his singing a streak of spirituality. He has discovered a new Gharana of music that is "Shiv Ka Gharana". He explains very beautifully and with the help of facts and logic about the relation of Lord Shiva and the origin of music. His elaborations are distinguished by his aesthetic approach, and his rich understanding of the literature (Sahitya) of music. Pt. C.L. Mishra Ji is the President of Shiv Ganga Sangeet Kala Kendra and Gurukul and Pt. C.L Mishra Music Charitable Trust (Regd.) in Varanasi and transferring his knowledge and perpetuating his music legacy.

5. In recognition of his musical acumen, Pt. C.L. Mishra has been distinguished with numerous awards and high honours. He is a "Special Top Grade" artist at the All India Radio and the Doordarshan. He is an ex-member of Ministry of Culture (North Central) Govt. of India. He has been conferred honorary doctorate degree from Rani Durgawati University, Jabalpur (M.P.). The Govt. of India conferred on him "Padma Bhushan" in 2010. He has received Naushad Award in 1995, Smithsonian Award by the Air and Space Auditorium (Washington D.C.) in 1996, Sangeet Shiromani Award in 1999, Sangeet Natak Academy Award in 2000, Tansen Award in 2001, Surmani Award in 2003, Pt. Madan Mohan Malwiya Award in 2004, Thumari Samrat Samman in 2005, Kalidas Samman in 2008 etc.





पंडित छन्नूलाल मिश्र

पंडित छन्नूलाल मिश्र भारत के एक महानतम और सर्वाधिक प्रतिभावान हिंदुस्तानी शास्त्रीय और अर्धशास्त्रीय गायक हैं। उनकी गणना प्राचीन नगरी वाराणसी के सर्वकालिक महान गायकों में की जा सकती है। उन्हें एक बहुमुखी प्रतिभा का गायक होने का गौरव प्राप्त है जो शास्त्रीय, अर्धशास्त्रीय, ख्याल, ठुमरी, दादरा कजरी, चैती, सावनी, होली, भजन, पूरब अंग की लोक गायन परंपरा आदि में समान रूप से पारंगत हैं।

2. 3 अगस्त, 1936 को आजमगढ़ जिले के हरिहरपुर गांव में जन्मे पंडित छन्नूलाल मिश्र को अपने स्वर्गीय पिता पंडित बद्री प्रसाद मिश्र से प्रारंभिक संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई। अपने पिता से गायन की बारीकियों को सीखने के बाद वह आगे संगीत शिक्षा के लिए किराना घराने के उस्ताद अब्दुल गनीखान साहब के संरक्षण में सीखने के लिए मुजफ्फरपुर (बिहार) आ गए। शिक्षक और विद्यार्थी का यह संबंध गुरु और शिष्य की एक बहुत पुरानी सम्मानित परंपरा के बीच पल्लवित हुआ।

3. पंडित छन्नूलाल मिश्र 'स्वरमंडल' बजाते हुए, अपनी सौम्य गायकी और उसके बीच संगीत की मूलभूत बातों को बयान करने की अपनी अनोखी शैली से श्रोताओं को बांधे रखते हैं। प्रख्यात संगीतशास्त्री स्वर्गीय ठाकुर जयदेव सिंह ने उनकी किशोर प्रतिभा को संवारने की पेशकश की और उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत की गहराई से परिचित करवाया। पंडित मिश्र को संगीत के असाधारण प्रवाह का दैवीय गुण प्राप्त है। वह बड़ी आसानी से अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के रंग में आ जाते हैं तथा लय और राग पर अपनी पूरी पकड़ प्रदर्शित करते हैं। उनके संगीत समारोह में कोई भी श्रोता उस अद्भुत सहजता से मंत्रमुग्ध हो जाता है जिसके द्वारा वह अनायास और सरलतापूर्वक संगीत की तारतम्यता को पेश करते हैं। उन्होंने अनेक ऑडियो एल्बम जारी किए हैं और बॉलीवुड के लिए भी गाया है।

4. पंडित छन्नूलाल मिश्र ने जो गायन शैली विकसित की है, वह शानदार किराना बढ़त और पटियाला घराने के अत्यंत अलंकृत गुण का मिश्रण है। उनकी शास्त्रीय ख्याल गायकी में पंजाब, पूरब और गया शैली का अद्भुत तालमेल रहता है। उन्होंने घराना शैली की सीमा को तोड़कर उसमें आध्यात्मिकता का रंग घोल दिया है। उन्होंने संगीत के एक नए घराने की खोज की है जिसे ''शिव का घराना'' कहते हैं। वह भगवान शिव और संगीत के उद्भव के बीच संबंध की तथ्यों और तर्क की सहायता से बहुत सुंदर व्याख्या करते हैं। उनकी व्याख्या सौंदर्य बोध तथा संगीत साहित्य की गहरी समझ पर आधारित होती है। पंडित छन्नूलाल मिश्र जी वाराणसी के शिवगंगा संगीत कला केंद्र और गुरुकुल तथा पंडित छन्नूलाल मिश्र म्यूजिक चैरिटेबल ट्रस्ट रजिस्टर्ड के अध्यक्ष हैं। वह अपना संगीत ज्ञान बांट रहे हैं और अपनी संगीत विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

5. पंडित छन्नूलाल मिश्र की संगीत प्रवीणता के सम्मानस्वरूप उन्हें अनेक पुरस्कार और उच्च सम्मान से विभूषित किया गया है। वह आकाशवाणी और दूरदर्शन के'स्पेशल टॉप ग्रेड' कलाकार हैं। वह संस्कृति मंत्रालय (उत्तर मध्य) भारत सरकार के पूर्व सदस्य हैं। उन्हें रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई है। भारत सरकार ने 2010 में उन्हें पद्म भूषण प्रदान किया। उन्हें 1995 में नौशाद पुरस्कार,1996 में एयर एंड स्पेस ऑडिटोरियम (वॉशिंगटन डीसी) द्वारा स्मिथसोनियन अवार्ड,1999 में संगीत शिरोमणि पुरस्कार, 2000 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 2001 में तानसेन पुरस्कार, 2003 में सूर्यमणि पुरस्कार, 2004 में पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार, 2005 में ठुमरी सम्राट सम्मान, 2008 में कालिदास सम्मान आदि प्राप्त हुए हैं।